UNDERSTANDING DISCIPLINES AND SUBJECTS

Unit 1

Q1. अध्ययन क्षेत्र के अर्थ, विशेषताएँ तथा प्रकृति का वर्णन कीजिए।

Ans अध्ययन क्षेत्र आज वैज्ञानिक विषय हो चुका है अध्ययन क्षेत्र को रिसर्च में एक महत्वपूर्ण विषय माना गया है। अध्ययन क्षेत्र एक गूढ़ है इसमें भिन्न है। इसकी परिभाषा देना बहुत कठिन है।

अध्ययन क्षेत्र को अंग्रेजी में discipline कहते हैं। जो लैटिन भाषा discipulus जिसका अर्थ है विषय या विद्यार्थी।

शब्द कोष में इसका अनेक अर्थ है जैसे प्रशिक्षण से लेकर प्राधिकार के नियंत्रण में रखना अपने व्यवहार पर आत्म नियंत्रण रखना किसी को निर्देशों का पालन करके प्रशिक्षण देना।

चिकित्सा के क्षेत्र में अध्ययन का अर्थ है डॉक्टर। शिक्षा में अध्ययन क्षेत्र को वैज्ञानिक प्रशिक्षण के रूप में समझा है। शैक्षणिक अध्ययन क्षेत्र, नए ज्ञान को अर्जित करने की प्रक्रिया को संगठित करने के लिए एक तकनीकी का प्रयोग किया

अध्ययन क्षेत्र की विशेषताएँ

1. अध्ययन क्षेत्रों में रिसर्च का एक विशेष उद्देश्य होता है (उदाहरण के लिए कानून, समाज, राजनीति)
2. अध्ययन क्षेत्रों की एक विशेष ज्ञान संग्रह होता है
3. अध्ययन क्षेत्रों के सिद्धान्त और अवधारणाएँ होती हैं जिनकी सहायता से विशेष रूप से संग्रहित ज्ञान को संगठित किया जा सकता है।
4. अध्ययन क्षेत्रों की अपनी विशिष्ट शब्दावली होती है या तकनीकी भाषा होती है जो उन अध्ययनों विषयों में उठे रिसर्च के अनुसार समायोजित होती है

5. अध्ययन क्षेत्रों की विशिष्ट रिसर्च विधियाँ होती है जो उनकी रिसर्च आवश्यकताओं के अनुसार विकसित हुई है।
6. अध्ययन क्षेत्रों के युनिवर्सिटी या कॉलेजों, शैक्षणिक विभागों और उनसे जुड़े व्यावसायिक संगठनों में पढ़ाए जाने वाले विषयों के रूप में मुख्य संस्थागत स्वरूप होते है।
7. जिस विषय में जितनी अधिक विशेषताएं होती वह उतना अधिक अध्ययन विषय होता है। जिसमें खुद के ज्ञान में बढ़ोत्तरी करने की क्षमता होती है।
8. शिक्षकों से कक्षा में शिक्षण करने के लिए अध्ययन क्षेत्रों की विषय-वस्तु में परिवर्तन करना पड़ता है।

अध्ययन क्षेत्र के प्रकार

1. यह वह अध्ययन है जो छात्र-छात्राओं को उस विषय को समझने तथा उसकी व्याख्या करने में सहायता करता है।
2. यह अध्ययन सामाजिक संस्थाओं की उत्पत्ति तथा विकास में सहायक है
3. यह मनुष्य तथा उसके भौतिक पर्यावरण के बीच होने वाली अन्तःक्रिया का अध्ययन करता है
4. अध्ययन क्षेत्र सामाजिक तथा अन्य प्रकार के पर्यावरणों का अध्ययन में निहित है
5. यह मानवीय सम्बन्धों पर बल देता है
6. अध्ययन का क्षेत्र व्यापक है।
7. अध्ययन का सम्बन्ध सभी विषयों से होता है
8. उस अध्ययन से प्रत्येक ज्ञान एवं सूचना स्पष्ट होती है।

(3)

अध्ययन क्षेत्र की प्रकृति :- विज्ञान के क्षेत्र में कोई वास्तविक क्रम नहीं हो सकता, क्योंकि प्रत्येक विषय में विशेष ज्ञान की आवश्यकता होती है इसलिए सभी अध्ययन विषय समान है। कुछ अध्ययन विषयों को अधिक उपयोगी, अधिक मान तथा दूसरों से अधिक महत्वपूर्ण माना जाएगा।
वाइस चांसलर को विज्ञान तथा तकनीकी के अध्ययन विषयों के इस आधार पर नियुक्त किया है कि उनके पास अधिक प्रबंधनीय अनुभव होता है। इसके अतिरिक्त कुछ नए विषय का अध्ययन करते हैं जैसे आईटी उनका संबंध व्यापार जगत से है इसलिए विद्यार्थी उनकी तरफ अधिक ध्यान देते हैं जबकि साहित्य जैसे दूसरे अध्ययन विषयों में विद्यार्थी कम रुचि लेते हैं जिसके कारण वे समाप्त होने के कगार पर पहुंच रहे हैं।

अध्ययन क्षेत्र के उद्देश्य :- शिक्षकों से कक्षा में शिक्षण करने के लिए अध्ययन क्षेत्रों की विषय-वस्तु में परिवर्तन करना पड़ता है इस पाठ्यक्रम के नीचे एक आधारभूत अंतर छिपा होता है जिस पर नीति निर्माताओं, अनुसंधानकर्ताओं और शिक्षाशास्त्रियों ने अधिक ध्यान नहीं दिया है वह अंतर है स्कूली विषयों और अध्ययन क्षेत्रों के बीच। लेकिन पाठ्यक्रम के विकास तथा शिक्षाशास्त्रीय व्यवहारों को समझने के लिए इस अंतर को समझना जरूरी है।

एक स्कूली विषय का अर्थ है स्कूली पाठ्यक्रम के अंदर ज्ञान का एक क्षेत्र जिसमें संस्थागत रूप से परिभाषित करना शैक्षिक विषय का अर्थ है एक यूनिवर्सिटी के अंदर एक शैक्षणिक विभाग में ज्ञान का एक क्षेत्र या शाखा। जिसका निर्माण विशेषज्ञ करते हैं।

Page No.: (1)
Date:

Q2. महात्मा गाँधी ने किस प्रकार की विषय-वस्तु के सुझाव अपने बुनियादी शिक्षा कार्यक्रम में दिए?

Ans गाँधी जी का शिक्षा के क्षेत्र में भी विशेष योगदान रहा है उनका मूलमंत्र था - शोषण विहीन समाज की स्थापना करना। उनके लिए सभी को शिक्षित होना चाहिए। क्योंकि शिक्षा के अभाव में एक स्वस्थ समाज का निर्माण असंभव है। उनका शिक्षा के प्रति जो योगदान था वह अद्वितीय था। उनका मानना था कि मेरे प्रिय भारत में बच्चों को 3H की शिक्षा अर्थात head, hand, heart की शिक्षा दी जाए। उन्हें स्वावलंबी बनाएं और देश को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

महात्मा गाँधी और भारतीय शिक्षा :→ गाँधी जी भारतीय शिक्षा को 'द ब्यूटीफुल ट्री' कहा करते थे। इसके पीछे कारण यह था कि गाँधी ने भारत की शिक्षा के बारे में जो कुछ पढ़ा था, उससे पाया था कि भारत में शिक्षा सरकारों के बजाय समाज के अधीन थी। गाँधी जी ने जो उद्देश्यों तथा सिद्धान्तों की व्याख्या की उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा योजना उनके शिक्षा दर्शन का मूर्त रूप है गाँधी जी भारतीय ज्ञान, विज्ञान समाज राजनीति और शिक्षा को लेकर बहुत शोध किये। संसार के अधिकांश लोग उन्हें महान राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक के रूप में जानते हैं। पर उनका यह मानना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा एक महत्वपूर्ण योगदान होता है उनका आचरण प्रयोजनवादी विचारधारा से ओत-प्रोत था।

Scanned with CamScanner

* आधारभूत शिक्षादर्शन सिद्धान्त :→

1. 7 से 14 वर्ष की आयु के बालकों की निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा हो।
2. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।
3. साक्षरता को शिक्षा नहीं कहा जा सकता
4. शिक्षा बालक के मानवीय गुणों का विकास करना है
5. शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक के शरीर, हृदय, मन और आत्मा का सामंजस्यपूर्ण विकास हो।
6. सभी विषयों की शिक्षा स्थानीय उत्पादक उद्योगों के माध्यम से दी जाए
7. शिक्षा ऐसी हो जो नवयुवकों को बेरोजगारी से मुक्त कर सके।
8. गांधी के अनुसार शिक्षा का अर्थ – बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का सर्वांगीण विकास करना है
9. बालक के सर्वांगीण विकास हेतु उसके शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक गुणों का विकास करना

10. हस्तकला के माध्यम से शिक्षा :→ हस्तकला के माध्यम से शिक्षा के बहुत गहरे अर्थ हैं। हस्तकला के माध्यम व्यक्ति सत्य तथा प्रेम तक पहुँचता है। शिक्षा का पुस्तकों से कोई संबंध नहीं है अध्यापक का मस्तिष्क ही बच्चों के लिए पुस्तक होना चाहिए। हस्तकौशल पुस्तकों से दस गुणा अधिक ज्ञान प्रदान करते हैं हस्तकौशल से बच्चों को विज्ञान और गणित की शिक्षा प्रभावी ढंग से दी जा सकती है। गांधी जी का कहना है बालक में शुरू से ही कार्य के प्रति सम्मान विकसित करना चाहिए। उन्हें मजदूरी नहीं बल्कि सम्मान जनक कार्य सिखाया जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

(3)

Page No.:
Date:

* गांधी जी की बेसिक अथवा बुनियादी शिक्षा →

सन 1937 में गांधी जी ने वर्धा में ही ऐ अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन' जिसे वर्धा शिक्षा सम्मेलन कहा गया था। उसमें अपनी बेसिक शिक्षा की नयी योजना को प्रस्तुत किया जो कि मैट्रिक स्तर तक अंग्रेजी रहित तथा उद्योगों पर आधारित थी। डा० जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में जाकिर हुसैन समिति का निर्माण किया गया तथा गांधी जी के शिक्षा सम्बन्धी तथा सम्मेलन द्वारा पारित किये गए प्रस्तावों के आधार पर नई तालिम' (बुनियादी शिक्षा) की योजना तैयार की गई। 1938 में हरिपुर के अधिवेशन में उस रिपोर्ट को स्वीकृति दी जो कि वर्धा - शिक्षा-योजना के नाम से प्रसिद्ध हुआ और बुनियादी शिक्षा का आधार है।

*1 बालकों एवं बालिकाओं को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दी जाए।

*2 शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो। हिंदी भाषा का अध्ययन बालकों तथा बालिकाओं के लिए अनिवार्य है।

*3 बेसिक शिक्षा के पाठ्यक्रम की अवधि 7 वर्ष की हो

*4 सम्पूर्ण शिक्षा का संबंध आधारभूत शिल्प से होता है

*5 शिल्प की शिक्षा उस प्रकार दी जाए कि बालक उसके सामाजिक एवं वैज्ञानिक महत्व को समझ सके

*6 शारीरिक काम को महत्व दिया ताकि सीखे हुए शिल्प के द्वारा जीविकोपार्जन कर सके।

*7 शिक्षा बालकों के जीवन, घर, ग्राम तथा ग्रामीण उद्योगों तथा व्यवसाय से सम्बन्धित हो।

x8 चुने गए शिल्प की शिक्षा देकर अच्छा शिल्पी बनाकर स्वावलम्बी बनाया जाए।

x9 बच्चों को कार्य उनकी रुचि के अनुसार सौंपा जाना चाहिए

10. बच्चे को कार्य की प्रत्येक विधि का ज्ञान होना चाहिए।

11 शिक्षा खेल को केन्द्र मानकर दी जानी चाहिए

Page No.:
Date:

शिक्षा के उद्देश्य

1. जीविकोपार्जन का उद्देश्य !→ गांधी जी के अनुसार शिक्षा ऐसी हो जो आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। बालक आत्मनिर्भर बन सके तथा बेरोजगारी से मुक्त हो।

2. सांस्कृतिक उद्देश्य !- गांधी जी ने संस्कृति को शिक्षा का आधार माना। उनके अनुसार मानव के व्यवहार में संस्कृति उत्तरदायित्व होनी चाहिए।

3. पूर्ण विकास का उद्देश्य !→ सच्ची शिक्षा वह है जिसके द्वारा बालकों के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास हो सके।

4. नैतिक तथा चारित्रिक विकास :→ गांधी जी ने चारित्रिक एवं नैतिक विकास को शिक्षा का उचित आधार माना है।

5. मुक्ति का उद्देश्य !→ शिक्षा के सर्वोच्च उद्देश्य के अन्तर्गत वे सत्य अथवा ईश्वर की प्राप्ति पर बल देते थे। मनुष्य का अंतिम एवं सर्वोच्च उद्देश्य आत्मानुभूति करना है।

6. रोजी रोटी का उद्देश्य !- शिक्षा का उद्देश्य बालक को इस काबिल बनाना कि वह बड़ा होकर अपना जीवन यापन अच्छी तरह कर सके। गांधी जी ने शिक्षा के साथ-2 बालक को खाना बनाना, लकड़ी का कार्य करना तथा वस्त्र बनाना आदि कार्यों का प्रशिक्षण देने का सुझाव दिया है।

7. शिक्षा का उद्देश्य मन, आत्मा और शरीर का विकास करना है वह शिक्षा अधूरी है जो इनमें से किसी एक की भी अनदेखी करती है।

Scanned with CamScanner

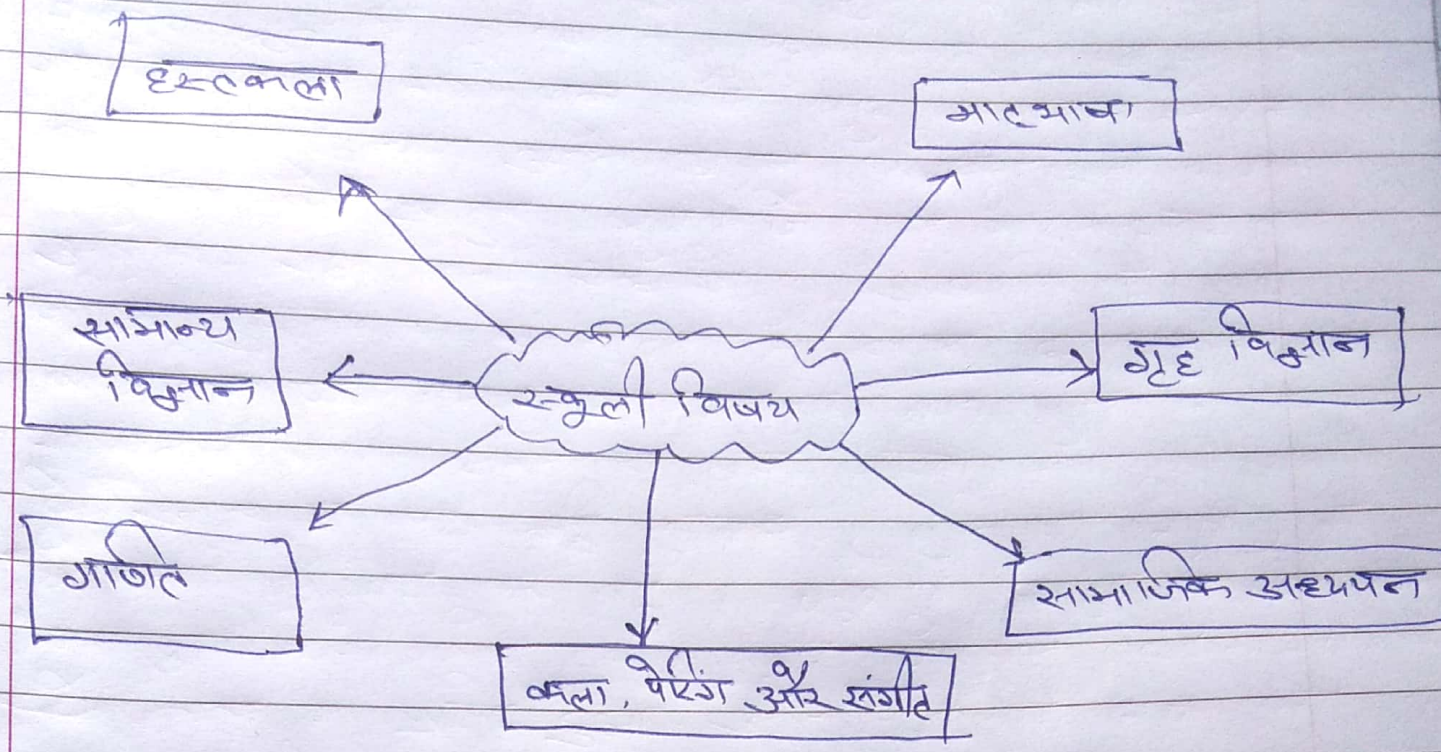

निष्कर्ष! – अतः हम कह सकते हैं कि गांधी जी के अनुसार शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए जिसमें बालक का सर्वांगीण विकास हो विद्यार्थी को हमेशा सीखने के लिए तत्पर रहना चाहिए। प्रत्येक बच्चे के अंदर शक्तियां छिपी होती हैं जिनको अध्यापक द्वारा बाहर निकालना होता है। गांधीजी के अनुसार वही अध्यापक अच्छी शिक्षा दे सकता है जो स्वयं चरित्रवान हो और गुणवान हो।